21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में प्रेम-सम्बन्धों का बदलता स्वरूप

हिन्दी विषय मे पी-एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. रंजना पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर

शोध छात्र

सविता यादव

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा– 282005

2023

प्रस्तावना -

उपन्यास गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है जो दो शब्दों उप +न्यास से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है समीप रखना। इसमें मुख्य तौर पर सामाजिक जीवन का वर्णन होता है। इसमें सामान्य जन जीवन के द्वंद, फैलाव और जाति का समावेश, अन्य विधा की तुलना में अधिक होता है। प्रेमचंद ने उपन्यास को "मानव जीवन का चरित्र" कहा है मृदुला गर्ग 'अन्यथा' के उपन्यास विशेषांक में हैं "दरअसल उपन्यास लिखना निजी जिंदगी को हलाक करके नई जिंदगी शुरू करने जैसा है वह भी पुनर्जन्म जैसी नई जिंदगी नहीं जो दोबारा मिलने पर ही पूरी तरह अपनी।" उपन्यास के लेखन की शुरुआत 19वीं शताब्दी से मानी जाती है।पूर्व में इस पर निम्न कार्य हुए हैं प्रस्तुत शोधों में 1990 से पहले के प्रेम के स्वरूप पर बात की गई है, लेकिन 1990 के बाद सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों में बहुत बड़ा बदलाव आया है जिससे प्रेम सम्बन्ध भी बदले और इस पर शोध की आवश्यकता थी। हिंदी में उपन्यास रचना की प्रेरणा प्रत्यक्ष रूप स बांग्ला अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी साहित्य से मानी जाती है।19 वीं सदी तक पूरे यूरोप में उपन्यास साहित्य समृद्ध हो चुका था। बांग्ला के प्रमुख उपन्यासकार-शरतचंद्र, रविन्द्र नाथ टैगौर, वंकिम चंद्र चटर्जी ने हिंदी में उपन्यास विधा का लेखन होने से पहले ही उपन्यास लिखना प्रारंभ कर दिया था। बांग्ला और अंग्रेजी उपन्यासों की लोकप्रियता से हिंदी साहित्य में इस विधा का श्री गणेश हुआ।इस बारे में **रामचंद्र शुक्ल** लिखते हैं- "नाटकों और निबंधों की ओर विशेष झुकाव रहने पर भी बंगभाषा की देखा देखी नए ढंग के उपन्यासों की ओर ध्यान जा चुका था।इस समय तक बंगभाषा में बहुत से अच्छे उपन्यास निकल चुके थे।

उपन्यास एक निश्चित समय की विशेषताओं के साथ निम्न भागों में विकसित हुआ।

प्रेमचंद पूर्व के हिंदी उपन्यासकारों ने मनोरंजन, सुधारवादी भावना ऐतिहासिकता आदि पृष्ठभूमि को लेकर उपन्यास की रचना की, जबकि इस युग के उपन्यासों में प्रेम सम्बन्ध पर चर्चा नहीं हुई है। मनोरंजन प्रधान उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री के चंद्रकांता उपन्यास को लिया जा सकता है। इस उपन्यास को सामान्य पाठक जगत में खूब सराहना मिली। चंद्रकांता के बारे में कथन-चंद्रकांता पढ़ चुकने पर वे चंद्रकांता की किस्म की कोई किताब ढूढने में परेशान रहते थे। सामाजिक उपन्यासों में श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत भाग्यवती(1877) उपन्यास को प्रमुखता से लिया जा सकता है। इसमें स्त्रियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा प्रदान की गई है।इस युग के अन्य प्रमुख उपन्यास एवम उपन्यासकार– 'सौ अजान एक सुजान'-बालकृष्ण भट्ट, 'लवंगलता'-किशोरीलाल गोस्वामी 'ठेठ हिंदी का ठाठ'- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध हैं।

प्रेमचंद युग में प्रेम को आदर्श रूप में दिखाया गया है प्रेमचंद युग तक प्रेम को सिर्फ पुरुष की दृष्टि से देखा तथा लिखा जा रहा था, लेकिन समकालीन उपन्यासों में महिलाओं की भागीदारी भी हो गई तथा उन्होंने प्रेम संबंधों को अपनी दृष्टि से लिखा जिसमें उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की मांग की तथा हर स्तर पर पुरुष के बराबर अपने को लाने की बात की।

अन्या से अनन्या में **प्रभा खेतान** कहती हैं "इस हद तक वस्तु हो जाती है कि अपनी ही देह की एक-एक परत को दूसरों की नजर स तौलती रहती है और नापने- जोखने तोलने के बाद की अतृप्ति, पूर्णता हासिल नहीं कर पाने की हार और थकान औरत को तोड़ कर रख देती है। "प्रेम व्यक्ति के भीतर विद्यमान उस शक्ति का नाम है जो व्यक्ति और दुनिया के बीच स्थित दीवार को तोड़ देता है तो दूसरों से जोड़ भी देता है। प्रेम व्यक्ति के अकेलेपन और विलगाव की भावना को दूर करने के बाद भी उसको वैयक्तिक सुरक्षित रहती है।इस बारे में **एरिक फ्रॉम** कहती हैं- "प्रेम एक ऐसी क्रिया है जिसमे दो व्यक्ति एक होकर भी दो बने रहते हैं।"

प्रेम मनुष्य के जीवन की आधारशिला है,जो संसार को रसमय बनाता है। यहां तक की 'प्रेम' व्यक्ति,समाज, देश और विश्वबन्धुत्व की भावना को एक सूत्र में बांधने में सहायक है। पुरातन काल से ही प्रेम रूपी रसधारा बहती चली आ रही है। प्रेम किसी को बदनामी का तो किसी को प्रतिष्ठा का प्याला पिला जाता है। प्रेम को अनेक रूपों में देखा जा सकता है, लेकिन हमारा शोध स्त्री पुरुष प्रेम पर केंद्रित है।

प्रेम शब्द की व्युत्पत्ति को विद्वानों ने अपने अपने तरह से व्याख्यायित किया है।

इंग्लिश संस्कृत शब्दकोश- 'प्रियस्य

भावः इम्नीच प्रदेशः इकाच कतवात न टीलोपः'

प्रेम को हिंदी साहित्य में विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है-

रामचंद्र शुक्ल – "विशिष्ट व्यक्ति या वस्तु के आकर्षण होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं"

गणपति चंद्र गुप्त प्रेम को अनुभूति मानते हुए कहते हैं – "प्रेम एक ऐसी भावनात्मक अनुभूति है, जिसे शब्दों के माध्यम से समझना संभव नहीं है"

प्रेम एक भावना है जिस पर समाज की परिस्थियों का प्रभाव पड़ता है। प्रेम वेदों, उपनिषदों के संदर्भ में श्रद्धा है।

उपनिषद- “आत्मा में जब किसी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है तो प्रेम स्वतः उत्पन्न हो जाता है।”

आज प्रेम की परिभाषा ही बदल चुकी है एक समय होता था जहां प्रेम की परिभाषा अपने को समर्पित कर देने में थी। यहां शरीर के बदले आत्मा को प्यार किया जाता था लेकिन आज का प्रेम शारीरिक रूप से ही शुरु होता है एक तरह से हम देख सकते हैं कि 21वीं सदी में इसकी परिभाषा ही मनुष्य ने बदल डाली है। आज प्रेम अपनी सुविधानुसार तोड़ा मरोड़ा जा सकने वाला सम्बन्ध बन गया है आज प्रेम का स्वरूप उदात्त का साधन नहीं रह गया बल्कि शारीरिक एवं मानसिक तुष्टि का साधन बन गया है।

अन्या से अनन्या में प्रभा खेतान कहती हैं “दिमाग से नहीं हृदय से किया जाता है और हृदय से यदि हम कुछ करते हैं तो सोचने समझने की जरूरत नहीं”

हमारे भारतीय मूल्यों के अनुसार सर्वे भवंतु सुखिनः का भाव समाहित है। बाजारवाद,पूंजीवाद तथा भौतिकता की चकाचौंध आदि स्थितियों से समकालीन मनुष्य की आकांक्षाएं उच्च होती गई तथा इस गतिशील दौड़ में उसे जबरदस्ती जुड़ना पड़ा। इसके जुड़ने के साथ ही परंपरागत मूल्यों के साथ टकराते हुए उसे नए मूल्य अपनाने पड़े।

21 वीं सदी के उपन्यास का आधार बाजार बाद, उपभोक्तावाद आदि है। भूमंडलीकरण सन 1991में आता है और संपूर्ण दुनिया को हम एक पटल पर पाते हैं। भूमंडलीकरण में संस्कृति, विचार, संस्कार ने एक दूसरे को आकर्षित किया है धीरे-धीरे इसी ने बाजार वाद उपभोक्तावाद का रूप धारण किया। बाजारवाद ने हमारे विचारों, भावों, संवेदनओ, संबंधों में परिवर्तन किया जिससे हम अपने में समाते चले गए और अकेलेपन का जन्म हुआ जिससे घुटन,संत्रास भी सामने आए। सभी का वर्णन 21वीं सदी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में वर्णित किया है। प्रत्येक व्यक्ति समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है वह जिस भी समाज में रहता है वहां कई तरह की रूढ़ियां, परंपराएं और विसंगतियां प्रचलन में है। इन सब का व्यक्ति विरोध करता है यदि विरोध कर पाता है तो कई तरह की समस्याओं से संघर्ष करना पड़ता और यदि वह सफल ना हुआ तो कई तरह की समस्याओं से संघर्ष करना पड़ता है और तनाव उत्पन्न होने लगता है। सन 1990 के बाद में उदारीकरण के अंतर्विरोध होने व्यक्ति को बाजार का घर आत्मा और बाध्यता के बीच और ज्यादा कर रख दिया है प्रतिस्पर्धा की दौड़ में व्यक्ति की अस्मिता और निजी संबंधों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। 21वीं सदी के इस आधुनिक घुटन भरे जीवन के तनावों और उलझनों को इस समय के हिंदी उपन्यासों में देखा जा सकता है। प्रसिद्ध महिला उपन्यासकार **सुधा अरोड़ा** का पप्रसिद् उपन्यास ‘यहीं कहीं था‘ में व्यक्ति की उलझन और तनाव का चित्रण है। उपन्यास

में सामाजिक विश्वासों, रूढ़ियों के कारण पात्रों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है कभी भी उससे संघर्ष करते हैं तो कभी उनसे उलझ जाते हैं।

भूमंडलीकरण का प्रभाव अब शहर ही नहीं गांव पर भी पड़ा वहां के व्यवहार, आपसी सम्बन्ध, आर्थिक व्यवसाय आदि सभी प्रभावित हुए हैं।

21वीं सदी के उपन्यासों में असुरक्षा बोध भी देखा जा सकता है जिसे अखिलेश के उपन्यासों में देख सकते है।

21वीं सदी में परिवार, व्यक्ति सभी में जो बदलाव आया है उसका असर प्रेम पर भी देखा जा सकता है।

नारी के शिक्षित होने के कारण स्त्रियों की बौद्धिक और मानसिक स्थिति में काफी बदलाव हुए हैं वो पुरानी मान्यताओं को तोड़कर स्वतंत्रता का मार्ग अपना रहीं हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी अपनी सही भूमिकाहोने को तलाशती हुई स्वयं को पहचानने और कुंठा से मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

21वीं सदी का मानव समाज, बाजारवाद, उपभोक्तवाद, भोगविलास तथा भूमंडलीकरण के दौर से गुजर रहा है। आज पूरा विश्व अर्थात छप्पर में बैठे व्यक्ति से लेकर संसद तक में बैठा व्यक्ति एक साथ आर्थिक विकास के सपने देख रहे हैं सभी लोग अपने व्यक्तित्व को दूसरों की दृष्टि से देख रहे हैं ऐसे में से दौड़ में जब व्यक्ति पीछे रह जा रहा है तो निराशा का शिकार हो रहे हैं। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव प्रेम संबंधों पर पड़ रहा है।

मैत्रेई पुष्पा का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' की कथावस्तु मूलतः कबूतरा जनजाति पर आधारित है लेकिन इसमें अल्मा तथा राणा नामक युवक की प्रेम कहानी को भी दिखाया गया है जिसमें अल्मा के पिता की हत्या कर दी जाती है तथा राणा को पुलिस पकड़ने आती है राणा उससे सम्बन्ध छोड़ कर भाग जाता है तो अल्मा के जीवन में अंधेरा छा जाता है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मिलजुल मन' में उन्होंने गुल और मोगरा दो बहनों के प्रगाढ़ अंतर-संबंधों के बहाने स्त्री की दुनिया को स्त्री की आंखों से देखने की कोशिश की है।

सुधा अरोड़ा, जो नारीवादी तथा सामाजिक समस्या से जुड़ी हुई लेखिका है ने अपने उपन्यास 'यहीं कहीं था घर' में सुजाता तथा एक युवक के बीच के प्रेम को दिखाया है जो उनके विद्यालय जीवन में होता है।

विषय चयन की प्रेरणा -

क्योंकि प्रेम सम्बन्ध समाज के बीच का विषय है जिसे मैंने अपने परिवेश में बखूबी देखा है। जब मैंने गोदान उपन्यास पढ़ा तो उसमें गोबर तथा झुनिया के प्रेम-सम्बन्ध को पढ़ा जिससे मैं बहुत प्रेरित हुई मेरी रुचि अन्य साहित्य विधाओं

की अपेक्षा उपन्यास में अधिक है इसलिए मैंने पी एच डी. में उपन्यास साहित्य पर काम करने का निर्णय लिया मैंने विभिन्न स्रोतों से पाया कि हिंदी उपन्यासों में प्रेम-सम्बन्ध जैसे विषय को लेकर शोध कार्य बहुत कम मात्रा में हुए हैं। हिंदी के उपन्यासों में 1990 के पहले के प्रेम संबंधों पर शोध तो हुआ था लेकिन 1990 के बाद के संबंधों पर नहीं इसीलिए मैंने हिंदी उपन्यासों में प्रेम संबंधों का बदलता स्वरूप विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

शोध की वर्तमान स्थिति एवं शोध कार्य की नवीनता -

विश्वविद्यालयों की शोध कार्य सूचियों के अवलोकन के पश्चात शोधार्थी ने पाया कि 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में प्रेम-संबंधों का बदलता स्वरूप विषय पर किसी भी विश्वविद्यालय में कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार उपन्यासों में प्रेम के स्वरूप पर किए गए शोध कार्य इस प्रकार हैं-

1 "हिंदी के समकालीन उपन्यासों में चित्रित प्रेम सम्बन्ध"- डीएम मुल्ला शिवाजी- विश्वविद्यालय कोल्हापुर

2 "हिंदी कहानी में प्रेम का स्वरूप"- रेनू दीदी -पंजाब विश्वविद्यालय

3 "हिंदी उपन्यासों में स्त्री पुरुष"- सुरेंद्र प्रताप -पूर्वांचल विश्वविद्यालय

उपर्युक्त शोधों में 1990 से पहले के प्रेम के स्वरूप पर बात की गई है लेकिन 1990 के बाद सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों में बहुत बड़ा बदलाव आया जिससे प्रेम सम्बन्ध भी बदले और इस पर शोध की आवश्यकता थी। मेरा शोध 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास में वर्णित प्रेम के स्वरूप पर आधारित होगा जो इस दृष्टि से उपर्युक्त शोधों से अलग होगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य के इतिहास में कहते हैं "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जात" जैसे व्यक्ति की चित्तवृत्ति बदलती है उसी गति से प्रेम सम्बन्ध भी समर्पणसे आदर्श, आदर्श से इंद्रिय होते चले गए।

वर्तमान समय में दांपत्य जीवन में बहुत तेजी से बदलाव आ रहा है इस बदलाव को समझने के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों से प्रेम किस प्रकार प्रभावित है इस विषय को समझाना भी शोध विषय की आवश्यकता रहेगी।

प्रेम का स्वरूप विभिन्न साहित्य की विधाओं में अलग-अलग कलेवर के साथ अभिव्यक्त हुआ है। हिंदी कथा साहित्य में प्रेम का स्वरूप आदर्शात्मकता के रूप में सामने आया जो धीरे-धीरे यथार्थवाद और इंद्रिय प्रेम पर आधारित रचनाएं आने लगी।

21वी सदी के हिंदी उपन्यास में प्रेम के मानदंड,संवेदना,अनुभूतियां कैसे खंडित हुई हैं, प्रेम का सात्विक रूप कैसे एंद्रीय हो गया है इसका विश्लेषण इस शोध की आवश्यकता है।

उपन्यास की संवेदना कथ्य शिल्प को लेकर अनेक शोध कार्य हुए हैं परंतु 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री पुरुष की भावनात्मक धरातल का विश्लेषण करना ही शोध का मूल उद्देश्य है।

साहित्य सर्वेक्षण-

- केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा
- राजकीय पुस्तकालय ललितपुर
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय
- डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर
- दयालबाग विश्वविद्यालय आगरा

शोध विषय का उद्देश्य-

शोध का कार्य नवीन विषय अथवा तत्व को प्रकाश में लाने का है। नवीन विचार अथवा तत्व के बीज प्राचीनता में निहित होते हैं।भारतीय संस्कृति में प्रेम को आदर्श तथा समर्पण के रूप में देखा गया है प्राचीन साहित्य के अध्ययन तथा परिवेश में देखने के बाद पता चलता है कि प्रेम के बिना एक अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। शोध विषय में भूमंडलीकरण,आर्थिक नीतियों तथा बेरोजगारी आदि के बाद प्रेम का स्वरूप क्या है। शोध का मुख्य उद्देश्य 21वीं सदी के उपन्यासों में अभिव्यक्त प्रेम,भूमंडलीकरण,आर्थिक नीतियों,बाजारवाद तथा बेरोजगारी के कारण एवं अन्य परिस्थितियों के कारण किस प्रकार प्रभावित हुआ है।

शोध प्रविधि-

साहित्य हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। साहित्य में निरंतर अनुशीलन की प्रक्रिया चलती रहती है। इस दृष्टि से साहित्य में शोध का महत्व और बढ़ जाता है। यह प्रमाणिकता के साथ-साथ वैज्ञानिक भी होता है। अनुसंधान की बहुत

सी विधियां शोध के समय प्रयोग की जाती हैं। प्रस्तावित शोध विषय 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में प्रेम संबंधों का बदलता स्वरूप में आवश्यकता अनुसार शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को पूर्ण करने में निम्न विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

- विवरणात्मक
- विश्लेषणात्मक
- वर्णनात्मक
- व्याख्यात्मक
- साक्षात्कार

विवरणात्मक- प्रेम के स्वरूप में प्रेमचंद्र , प्रेमचंद युग तथा प्रेमचंदोत्तर युग में जो परिवर्तन दृष्टिगत है, उसका अध्ययन विवरणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से किया जाएगा।

विश्लेषणात्मक- यदि प्रेम के स्वरूप को प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद तथा प्रेमचंदोत्तर युग में देखें तो प्रेम के स्वरूप में बड़ा परिवर्तन दृष्टिगत होता है उसे परिवर्तित रूप का विश्लेषण इस शोध विधि द्वारा किया जाएगा।

वर्णनात्मक- प्रेम पर आधारित हिंदी के प्रमुख उपन्यासों में प्रेम के स्वरूप की विविधता प्रस्तुत करने वाले प्रसंगों का वर्णन करने में वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करेंगे।

व्याख्यात्मक- इस शोध प्रविधि में 21वीं सदी के प्रेम के स्वरूप की व्याख्या की जाएगी।

साक्षात्कार- समाज के विभिन्न समुदाय के स्त्री-पुरुष एवं साहित्यकारों से साक्षात्कार किया जाएगा जिससे 21वीं सदी के प्रेम के स्वरूप को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

21 वी सदी के हिंदी उपन्यासों में प्रेम संबंधों का बदलता स्वरूप

प्रथम अध्याय – 21वी सदी का उपन्यास:अवधारणा, समय सीमा, बदलाव के बिंदु

1.1 21वी सदी का उपन्यास: स्वरूप और अवधारणा

1.2 21वीं सदी का उपन्यास: समय सीमा

1.3 21वी सदी का उपन्यास: प्रेम की सार्थकता एवं बदलाव

द्वितीय अध्याय - 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासकारों की दृष्टि में प्रेम-सम्बन्ध।

2.2 प्रेम के सम्बन्ध में पुरुषों का दृष्टिकोण

2.3 प्रेम संबंधों पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

तृतीय अध्याय - पूर्ववर्ती उपन्यासों में प्रेम संबंधों का अवलोकन

3.1 आदर्शवादी प्रेम का स्वरूप और उपन्यास

3.2 आदर्श ओन मुखी मुक्ता की पृष्ठभूमि और प्रेम

3.3 ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन में प्रेम

चतुर्थ अध्याय - 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में प्रेम का स्वरूप

4.1 स्त्री पुरुष के प्रेम सम्बन्ध और समाज

4.2 दांपत्य जीवन का प्रेम व पारिवारिक संरचना

4.3 विवाहेतर प्रेम सम्बन्ध, समाज परिवार व्यक्ति की दृष्टि में

पंचम अध्याय - समसामयिक जीवन और प्रेम मुक्ति का स्वर उपसंहार

नोट - शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोध कार्य में 20% परिवर्तन संभव है।

परिशिष्ट

- आधार ग्रंथ
- समीक्षात्मक हिंदी ग्रंथ
- समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रंथ
- पत्र -पत्रिकाएं

आधार ग्रंथ

1 गीतांजली श्री, तिरोहित, राजकमल प्रकाशन, 2001

2 सुधा अरोड़ा, यहीं कहीं था घर, राजकमल प्रकाशन, 2010

3 मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़, राजकमल प्रकाशन, 2010

4 गीतांजलि श्री, खाली जगह, राजकमल प्रकाशन, 2006

5 उषा प्रियंवदा, अंतर्वसी, राजकमल प्रकाशन, 2000

6 उषा प्रियंवदा, भया कबीर उदास, राजकमल प्रकाशन, 2007

7 मैत्रेई पुष्पा, कहे ईसुरी फाग, राजकमल प्रकाशन, 2004

8 मैत्रेई पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, 2000

9 मधु काकरिया, खुले गगन के लाल सितारे, राजकमल प्रकाशन, 2000

10 मधु काकरिया, सलाम आखिरी, राजकमल प्रकाशन, 2002

11 जया जादवानी, तत्वमासी, राजकमल प्रकाशन, 2000

12 अलका सरावगी, शेष कादंबरी, राजकमल प्रकाशन, 2001

13 अलका सरावगी, कोई बात नही, राजकमल प्रकाशन, 2004

14 मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, सामयिक प्रकाशन, 2009

सहायक ग्रंथ सूची

1 मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, लोक भारती प्रकाशन, 2021

2 विजय कुमार अग्रवाल, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में सामंत जीवन, प्रकाशन दिल्ली, 1990

3 अरुण प्रकाश, उपन्यास के रंग, अंतिका प्रकाशन, 2013

4 श्रीधरण, स्त्री संघर्ष और सर्जन, अंतिका प्रकाशन, 2011

5 श्रीधरण, स्त्री संघर्ष और सर्जन, अंतिका प्रकाशन, 2011

6 रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, श्री प्रकाशन, दिल्ली, नवीन संस्करण

7 रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, 1986

8 बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2014

9 स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और नागार्जुन के उपन्यास, अंतीका प्रकाशन, 2011

10 रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

11 हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, बाइसवां संस्करण, 2018

12 आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि, भाग 1

13 रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना

14 आचार्य रजनीश, ओशो टाइम्स, मार्च 1997

15 हजारी प्रसाद द्विवेदी, धर्म साधना

16 रामचंद्र शुक्ल, पदमावत की प्रेम पद्धति

17 कात्यायन, प्रेम परंपरा और विद्रोह

18 प्रभा खेतान, भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

19 मधु कांकरिया, सेज पर संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

20 कुमार शरद, शिखर और सीमाएं, हिंदी पॉकेट बुक्स, 1998

21 प्रभा खेतान, आधुनिक परिवेश में स्त्री

22 अरविंद जैन व लीलाधर मंडलोई, स्त्री मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004

23 मैत्रेई पुष्पा, खुली खिड़कियां, सामयिक प्रकाशन, 2007

24 रिचा शर्मा, मैत्रेई पुष्पा के उपन्यास, एक अनुशीलन नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

25 डॉक्टर संजय गर्ग, स्त्री विमर्श के कालजई उपन्यास, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

26 गोपा जोशी, भारत में स्त्री असमानता, भारत सरकार, 2006

पत्र पत्रिकाए

1 रवींद्र कालिया, नया ज्ञानोदय, दिल्ली

2 हरिनारायण, कथादेश, दिल्ली

3 ज्ञानरंजन, पहल, जयपुर

4 सुधीश पचौरी, वागर्थ, कोलकाता

5 प्रभाकर श्रोत्रिय, दिल्ली

शब्द कोश

- डॉ पृथ्वीनाथ पांडे,सामान्य हिंदी, यूनिक पब्लिकेशन
- डॉ हरदेव बाहरी, शब्द अर्थ प्रयोग
- डॉ वासुदेव नंदन प्रसाद, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना